उप मुख्यमंत्री सुदेश कुमार महतो ने किया दो दिवसीय समावेशी मीडिया कार्यशाला का उद्घाटन

# जन सरोकारों का दर्पण बने मीडिया

- पत्रकारों से खबरों के जरिए लोकतांत्रिक चेतना के प्रसार की अपील

भास्कर न्यूज | रांची

लोकतंत्र की मजबूती के लिए मीडिया के एजेंडे का जनपक्षधर होना आवश्यक है। जनसरोकारों का दर्पण बने बिना मीडिया लोकतांत्रिक चेतना का वाहक नहीं बन सकती है। आज के समय में सबसे ज्यादा जरूरी है कि गांवों की आर्थिक व सामाजिक व्यवस्था में बदलाव किए जाएं। ये बातें उपमुख्यमंत्री सुदेश कुमार महतो ने कहीं। वे सोमवार को होटल बीएनआर चाणक्य में दो दिवसीय समावेशी मीडिया कार्यशाला के उद्घाटन के मौके पर बोल रहे थे। विकेंद्रित योजना के निर्माण में क्षेत्र विशेष की स्थिति व उसकी प्राथमिकताएं तय करने की जरूरत बताते हुए उन्होंने योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में मीडिया की भूमिका पर बल दिया। योजना एवं विकास सचिव अविनाश कुमार ने कहा कि योजनाओं को आम जन तक पहुंचाना आज बेहद चुनौती भरा काम है। उन्होंने लोकतंत्र के विकेंद्रीकरण को योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए जरूरी बताया। कार्यशाला में राज्य के विभिन्न मीडिया संस्थानों के प्रतिनिधियों के अलावा पंचायत प्रतिनिधि भी शामिल हुए। कार्यशाला का आयोजन यूएनडीपी एवं इंक्लूसिव मीडिया फॉर चेंज द्वारा किया गया।

होटल बीएनआर चाणक्या में मीडिया कैपिसिटी पर यूएनडीपी के सेमिनार में बोलते उप मुख्यमंत्री सुदेश महतो।

## मीडिया निभाए सकारात्मक भूमिका

यूएनडीपी के गवर्नेंस सलाहकार टीआर रघुनंदन ने कहा कि योजनाओं की सही जानकारी आम व्यक्ति तक पहुंचाने की जिम्मेवारी मीडिया की ही है। उन्होंने योजना के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सिंधु घाटी और रोमन सभ्यता के समय से ही योजनाओं की शुरुआत हुई। लेकिन आज के दौर में योजनाओं की रूपरेखा पूरी तरह बदल गई है। उन्होंने योजना बनाने और उसे लागू कराने में आने वाली कठिनाइयों के व्यावहारिक पक्षों पर जोर डालते हुए कहा कि आज मीडिया को सामने आकर इस विषय पर पहल करनी चाहिए। योजना आयोग के प्रोग्राम यूनिट से जुड़े विशेषज्ञ सुंदर एन मिश्रा ने प्रशासन के विकेंद्रीकरण के नाम पर जटिल केंद्रीकरण की प्रक्रिया अपनाए जाने की विस्तार से जानकारी दी। साथ ही संवैधानिक अधिकार दिए जाने के बावजूद स्थानीय स्तर के विरोधाभासी अधिनियमों की बाधाओं को दूर करने पर बल दिया।

## गांवों को विशेष अधिकार मिले

कार्यशाला के दो सत्रों में एसएन मिश्रा और प्रो रमेश शरण ने भी अपने विचार रखे। रमेश शरण ने पेसा कानून के विभिन्न पहलुओं से लोगों को अवगत कराया। सुधीर पाल ने गांवों को विशेष अधिकार दिए जाने की बात कही। प्रश्नोत्तर सेशन में प्रतिभागियों की चिंताओं का समाधान भी विशेषज्ञों द्वारा किया गया। संचालन इंक्लूसिव मीडिया फॉर चेंज के विपुल मुद्गल ने किया।

## जन-संवेदना का साक्षात्कार करें पत्रकार

दिल्ली के थिंक टैंक ऑर्गेनाइजेशन सेंटर फॉर स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसाइटी से जुड़े मीडिया एक्सपर्ट विपुल मुद्गल ने कहा कि जन-संवेदना का साक्षात्कार कर ही पत्रकार अपने समाचारों के दायरे का विस्तार कर सकते हैं। सामाजिक पूंजी का संग्रह ही किसी पत्रकार के लिए नए विचारों का स्रोत होता है। जो उनके पेशेवर जीवन में भी सफलता देता है।